ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

17-12-2024

ब्राह्मण जीवन का आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है। इसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश वा सन्तुष्ट रखना -यह भी अपने को धोखा देना है।

Be a jewel of contentment, always remain content and make everyone content.

The natural inheritance of Brahmin life is to be a constant embodiment of happiness, an embodiment of peace and contentment of the mind. In order to experience this, there has to be purity in the mind. To keep yourself happy and content with external facilities or through service is self-deception.